International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नारी की वर्तमान स्थिति की सामाजिक दिशा और दशा

एमरेंसिया खलखो, असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी
संत जोसेफ कॉलेज, नॉर्थ पोइंट, दार्जिलिंग (प० बंगाल)
ईमेल: emerencia.xalxo@gmail.com

आज देश जिस दौर से गुजर रहा है। यह सोचनीय तो है ही परन्तु विचारणीय है। पूरा देश नोट बंदी तथा जी एस टी की मार से जूझ रहा है और खासकर निम्न वर्गीय परिवार उस आतंकता की कायरता के किंकत्तव्यविमूढ़ के चक्कर में फंसती चली जा रही है वहीं दूसरी और भूखमरी, बेरोजगारी, अपना पैर पसार रही है। चहुं दिशा अस्त – व्यस्त, यंत्र – तंत्र नजर आ रही है। कोई किसी को ढांढ़स बांधते, तो कोई दिलासा देते हुए, इस तरह से पूरे देश को एक सूत्र में बांधे हुए है। अपनी जीविका हेतु सुदूर प्रांत में नौकरी की तलाश में गये छोटे – बड़े सभी कोई अकेला, कोई सपरिवार। यह दृश्य हृदय को मर्माहत करने वाली रही। ऐसी अवस्था को देख हृदय विदारक जान पड़ रहा था। काले धन को विदेश से अपने देश में वापस लाने का प्रण लिए थे हमारे प्रधानमंत्री जी। इसके साथ –साथ प्राकृतिक अपदाओं ने भी अपना प्रकोप बरकार रखा। कहीं बाढ़ की समस्या, कहीं अकाल, अब भी हैदराबाद, मंबई में बाढ़ का सैलाव नजर आ रहा है। कहीं राजनीति की उठा – पठक,मध्यप्रदेश की सियासी घमासान, राजस्थान की भी यही सरगर्मी, कहीं चुनाव. कहीं जूलूस। देश के क्षेत्र रक्षण हेतु सर्जिकल स्ट्राइक भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तान में घुस कर सात आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर सकुशल देश वापस लौट आए थे।

निर्भया कांड की का बलत्कार और उस पर जानलेवा हमला बहुत ही दर्दनाक घटनारही है। निर्भया कांड की दिल दहलाने वाली घटना बहुत ही दयनीय है। इस पर बार – बार सवाल उठाना चाहिए। ऐसी रवैये का प्रतिकार करना चाहिए। यह सुशिक्षित, समझदारी की निशानी नहीं है बल्कि ग्रसित मानसिकता है। देश में इस तरह की दुर्व्यवहारों के मध्यस्थ एक नारी की स्थिति और क्या रह जाएगी। आए दिन कई ऐसे ही घटनाएं सुनने को मिलती है। बलात्कार, छेड़खानी, तेजाब फेंकना, वेश्यावृति में जबरन ढकेली जाना, दंडनीय अपराध है। नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। चाहे वह छोटी हो या बड़ी, गरीब हो या अमीर, या फिर भिखारी ही क्यों न हों। वह भी इससे अछूती नहीं है। पुरुष के इस बेतुके बर्ताव को बदलना होगा। यह हर स्त्री की ललकार है।

आज देश भर में बेटी - पढ़ाओ, बेटी- पढ़ाओ को प्राथमिकता देने की बात की जाती है पर कहीं यह चरितार्थ होते नजर नहीं आता। परन्तु दूसरी ओर भ्रूण परीक्षण, भ्रूण- हत्या धड़ल्ले से चल रहा है। यह बात जग जाहिर है कि देश की प्रगति तभी संभव है जब आम जनता की स्थिति

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और स्त्री की स्थिति में उध्दार हो। केशवचन्द्र सेन समाज सेवा और सुधार कार्य में सक्रिय हमेशा रहे। उन्होंने स्पष्ट कहा था — "हमारी महिलाओं की स्थिति और दयनीय है। इस चुनौती पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। सभ्यता के इतिहास में पृथ्वी पर ऐसा कोई देश नहीं है जिसकी महिलाएं अज्ञान के गर्त में पड़ी हों और वह देश उन्नति कर गया हो। वास्तव में महिलाओं की खराब दशा हमारे देश की बुरी सामाजिक दशा की सूचक है। इसलिए यदि भारत की हैसियत को अन्य राष्ट्रों के समक्ष ऊपर उठाने की हमारे भीतर कोई आकांक्षा है तो हमें अपनी महिलाओं को अज्ञान और अंधविश्वास के मकड़जाल से बाहर निकालना होगा। "[1] अत: हमारे समाज को इसकी ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

मुख्यधारा से अलग औऱ हाशिए का सवाल साहित्य को अपनी ओर आकर्षित करता ही रहा है। चाहे गद्य हो या पद्य दोनों ही विधाओं में इसकी अभिव्यक्ति नाना रूपों में सामने आती रही है। आज हर एक विमर्श अपने आप में सशक्त भूमिका से आगे बढ़ रहा है। साथ ही, कई बदलावों की दिशा में अग्रसर हो रहा है। इन सारे विमर्शों में स्त्री विमर्श अत्यंत ज्वलंत मुद्दा के रूप में उभरता ही जा रहा है। अगर बात हमारी हिंदी साहित्य की करें तो, यहां भी स्त्री का यहां स्त्री मुक्ति के प्रश्न भी है। तो, साथ ही यातना झेलती मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर होती, रूढ़ियों को तोड़ती स्त्री की अभिव्यक्ति भी। हंस पत्रिका में भी इसकी अभिव्यक्ति पुरजोर तरीके से सामने दिखाई देती है। भवदेव पाण्डेय लिखते हैं — "भारतीय समाज में स्त्री की एक अलग जाति है, जो अगाड़ी – पिछाड़ी दो तरफ मार झेलती हुई इक्कीसवीं शताब्दी के संकरे दरवाजे पर खड़ी है। दरबान हमेशा से मर्द रहा है, जो गहरी जांच-पड़ताल और सूक्ष्म अनुसंधान के बाद उसे देवी या कुलटा की सनद देकर अलग –अलग कटघरे में ढेलता रहा है। "[2] आज भारतीय संदर्भ में जब भी स्त्री की बात आती है, तब मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा' में लिखी गई पंक्ति— "अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,

आंचल में है दूध और आंखों में पानी"[3]

हो या फिर रघुवीर सहाय की कविता 'पढ़िए गीता बनिए सीता' प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में तुरंत उभर आता है। इसके पीछे का सबसे बड़ा कारण है पितृसत्तात्मक सोच के तले दबे स्त्री जीवन की कहानी, जो एक लंबी परंपरा से हमारे समाज में चली आ रही है। स्त्री का जीवन हो या स्त्री होने का संघर्ष इसे अगर हम उदय प्रकाश की कविता 'औरतें' के माध्यम से देखें, तो स्त्री

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जीवन के व्यापक फलक को अभिव्यक्त करती हैं। बलात्कार की पीड़ा झेलती, कहीं कामकाजी महिला होने के साथ घर परिवार के दायित्व का पारंपरिक रूप से निर्वाह करते हुए अभिव्यक्त स्त्री का चित्रण इस कविता में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। साथ ही अपने कर्मों को निभाते हुए यातनाएं मिलने के पश्चात भी उस पर अडिग रहने का साहस भी। इन सब के उपरांत कविता में ऐसी जड़ मानसिकता का चित्रण है, जो आज भी समाज में कहीं ना कहीं उपस्थित है। कविता में भ्रूण हत्या को ले संकेत करते हुए उदय प्रकाश ने लिखा है—

" हज़ारों-लाखों छुपती हैं गर्भ के अंधेरे में

इस दुनिया में जन्म लेने से इनकार करती हुईं

लेकिन वहां भी खोज़ लेती हैं उन्हें भेदिया ध्वनि-तरंगें

वहां भी,

भ्रूण में उतरती है

हत्यारी तलवार।"[4]

ऐसी परिस्थितियों को देखते हुए से कविता की दो पंक्ति याद आती है—

" तुम जो जी में आए, कर लो मेरे साथ

बस मुझे किसी तरह जी लेने दो।"[5]

स्त्री की परिस्थितियों के पड़ताल के क्रम में लिखी गई विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की कविता 'स्त्री को समझने के लिए' में उनकी स्वीकारोक्ति है—

"कितना गहरा सृजन का अंधकार

कितना रहस्य मन की पुकार

स्त्री, तुम्हें समझने के लिए

जन्म लेना पड़ेगा स्त्री रूप में"[6]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भोगे हुए परिस्थितियों की अभिव्यक्ति, देखने,सुनने से कहीं ज्यादा मार्मिक रहती है। ऐसे में, समकालीन कवियत्रियों के मर्म को समझना अति अनिवार्य है। इसी क्रम रश्मि रामानी की यह पंक्तियां सहज ही स्मरण हो आती है कि—

" उसकी देह की कमलीयता बदल जाती है चट्टान में

और

दर्द की दीवार को तोड़कर फूटते हैं नस्लों के अंकुर अविष्कृत होती है नई देह

उस दिन औरत –भक्षियों का यह सारा पाखण्ड समाप्त हो जाएगा।"[7]

खुद को वस्तु समझे जाने की पीड़ा से अभ्यस्त हो चुकी नाड़ी उससे मुक्ति के लिए पुकार करती है, रश्मि रमानी की यह पंक्तियां उसे बखूबी स्पष्ट कर रही हैं। इसी पुकार के क्रम में सविता सिंह की कविता 'अपने जैसा जीवन' नामक पुस्तक की यह पंक्तियां भी दृष्टव्य है —

" मै किसकी औरत हूं

मैं अपनी औरत हूं

अपना खाती हूं

जब जी चाहता है तब खाती है

मैं किसी की मार नहीं सहती

और मेरा परमेश्वर कोई नहीं।"[8]

इन पंक्तियों में पुरुष की उन मानसिकता ऊपर गहरा चोट करने का प्रयास किया गया, जहां स्त्री के अपने अस्तित्व को स्वीकार पाना उनके लिए मुश्किल है । ऐसी मानसिकता पर सविता भार्गव की यह पंक्तियां प्रहार करती नजर आती हैं—

" औरत अंधकार की यातना है। धीरे-धीरे खोल रही है अपना जूड़ा

धीरे –धीरे संवार रही है केश

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कुछ याद कर रही है धीरे धीरे

कुछ भूल रही है धीरे धीरे। देह है परछाई है।"[9]

अपना समाज के स्त्री संबंधी गिनाने नजरिए को उद्घाटित करते हुए 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' काव्य संग्रह में निर्मला पुतुल 'आदिवासी स्त्रियां' कविता में लिखती है—

"तस्वीरें कैसे पहुंच जाती हैं उनकी महानगर

नहीं जानती वे! नहीं जानती!!"[10]

ह्यूमन ट्रैफिकिंग का यह प्रसंग अत्यंत ही घृणित है। घृणा और हवस के भयावह रूप को हम किरण अग्रवाल की कविता के पंक्तियों में भी देखते हैं जहां वे लिखती हैं—

" मुट्ठी भर भूने चने मूंगफली देकर

कोई भी उसकी बच्ची को फुसला ले जाता है

वे नहीं जानती 'बलात्कार' शब्द

वे सुबक-सुबककर रोती हैं बस

और अपनी नन्हीं-नन्हीं मैली हाथों से

अपने धूल से सने आंसू पोंछती जाती हैं।"[11]

यह पंक्तियां हृदय को अत्यंत भेदती है। रोजमर्रा अखबार इन्हीं खबरों से भरा पड़ा हमारे समक्ष होता है। हवस की बीमार मानसिकता किसी भी हद तक गिर सकती है,यह समाज का एक बेहद शर्मनाक पक्ष है।

स्त्रिया जो हमारे समाज में पूजनीय कही जाती हैं, परंतु वास्तविकता कुछ और ही है। इन परिस्थिति को स्नेहीमयी चौधरी के शब्दों में कहें तो—

" अब मैं वहां जा रही हूं जहां से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शून्य और अंधेरा

मुझे अपनी ओर घसीटे लिए जा रहे हैं।

मैं कह रही हूं -

मैं वहां जाना नहीं चाहती"[12]

अपने कर्तव्यों को निभाने के बावजूद उचित स्थान ना पाने पर एक जो खींच उठती है, उसे सविता भार्गव की पंक्तियों से समझा जा सकता है—

" सुंदर नहीं हूं

तो पूरे देश की दासी है तो मल्लिका हूं सजे हुए बिस्तर की

उसकी आंखों में भर आई एक असहज खामोशी

आह कैसे करेगा इस औरत का जीवन

संशय में पड़ गई यह

समझते हुए सभी कुछ ।"[13]

कभी आतंक से, कभी सम्मोहन से स्त्री को जैसी बर्बर यातना या शोषण का शिकार बनाया गया है, वह पिछले तमाम बरसों के भारतीय साहित्य का दुखद प्रसंग रहा है। पूंजी-हिंसा का व्यापार करने वाले मीडिया के तमाम साधन इस खतरे की अक्सर उत्सव बनाते, मंगलेश डबराल की कविता अगले दिन स्त्री यातना, करुणा, क्रोध क्षोभ के तनाव को बखूबी संयम के साथ व्यक्त करते हैं —

"अगले दिन उसके भीतर

मिलेंगे झड़े हुए कितने पत्ते

अगले दिन मिलेगी खुरों की छाप

अगले दिन अपनी देह लगेगी बेकार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आत्मा हो जाएगी असमर्थ

कितने कीचड़- कितने खून से भरी

रात होगी उसके भीतर अगले दिन।"[14]

विमर्श की दिशा बहुआयामी होती, जो एक व्यापक अध्ययन की मांग करती है। स्त्री विमर्श की व्यापक परिदृश्य को उद्घाटित करने के अपेक्षा मैंने इसके 1 आयाम पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं,जो कि स्त्री मुक्ति पारंपरिक रूढ़ियों तथा प्रति पितृसत्तात्मक सोच में जकड़ी मानसिकता की अभिव्यक्ति के साथ , एक खीज और उससे मुक्ति की पुकार लगती है।

पितृसत्तात्मक सोच के तले दबे स्त्री जीवन की कहानी, जो एक लंबी परंपरा से हमारे समाज में चली आ रही है। स्त्री का जीवन हो या स्त्री होने का संघर्ष इसे अगर हम उदय प्रकाश की कविता 'औरतें' के माध्यम से देखें, तो स्त्री जीवन के व्यापक फलक को अभिव्यक्त करती हैं। बलात्कार की पीड़ा झेलती, कहीं कामकाजी महिला होने के साथ घर परिवार के दायित्व का पारंपरिक रूप से निर्वाह करते हुए अभिव्यक्त स्त्री का चित्रण इस कविता में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। साथ ही अपने कर्मों को निभाते हुए यातनाएं मिलने के पश्चात भी उस पर अडिग रहने का साहस भी। इन सब के उपरांत कविता में ऐसी जड़ मानसिकता का चित्रण है, जो आज भी समाज में कहीं ना कहीं उपस्थित है। कविता में भ्रूण हत्या को ले संकेत करते हुए उदय प्रकाश ने लिखा है पितृसत्तात्मक के प्रश्न पर अलग तरह से कोई सोच नहीं सकते हैं। ग्रसित हमारा देश वास्तव में अब तक निकल नहीं पाया है। लड़की के जन्म के बारे में गलत धारणाएं व्याप्त है अथर्वसंहिता में कहा गया है कि — "हमारे यहां पुत्र का जन्म और कन्या का जन्म किसी और के घर हो।"[15] इससे तुच्छ मानसिकता और क्या हो सकती है। स्त्रियों को मुख्यधारा में लाने की जो कोशिश है उसे क्रियान्वित भी करने की बहुत जरूरी है। विवेकानंद ने कहा "जब तक आप स्त्री पुरुष भेद को भूलकर प्रत्येक व्यक्ति में मानवता का दर्शन तब तक इस देश की स्त्रियों की यथार्थ उन्नति नहीं हो सकती।"[16]

मानवता को शर्मशार कर देने वाली ह्यूमन ट्रैफिकिंग सभ्य समाज के माथे पर बदनुमा दाग से कम नहीं है। ह्यूमन ट्रैफिकिंग का यह प्रसंग अत्यंत ही घृणित है। आज को मानव तस्करी जिस्मफरोशी 80 प्रतिशत होती है। भारत देश इस तरह के अपराध का गढ़ माना जाता है। यह

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सोचनीय है हमारे लिए कि इस समस्या का निदान कैसे हो। घृणा और हवस के भयावह रूप को हम किरण अग्रवाल की कविता के पंक्तियों में भी देखते हैं जहां वे लिखती हैं—

" मुट्ठी भर भूने चने मूंगफली देकर

कोई भी उसकी बच्ची को फुसला ले जाता है

वे नहीं जानती 'बलात्कार' शब्द

वे सुबक-सुबककर रोती हैं बस

और अपनी नन्हीं-नन्हीं मैली हाथों से

अपने धूल से सने आंसू पोंछती जाती हैं।"[17]

यह पंक्तियां हृदय को अत्यंत भेदती है। रोजमर्रा अखबार इन्हीं खबरों से भरा पड़ा हमारे समक्ष होता है। हवस की बीमार मानसिकता किसी भी हद तक गिर सकती है,यह समाज का एक बेहद शर्मनाक पक्ष है।

आज के भूमण्डलीयकरण युग में बाजार,मीडिया में भी दिखा रहा है कि स्त्री अपने चुनाव से लंबे समय के पार भी सुंदर, सुघड़, मॉड, यानी मॉडल जैसी दिख सकती है। यहां सौंदर्य – प्रसाधन के चमकीले ब्रांड, योग, खान पान के नए ढंग टेलीविजन के पर्दे पर दिखाए जाते हैं। सेलफोन पर एसएमएस आता है – 'अगर आपको स्मार्ट बने रहना है तो वजन घटाइए। ' घरों में ऐसे व्यायाम संयंत्र हैं, जो अमीर स्त्रियों को जीवन – भर सुंदर दिखने के लिए तौर-तरीके बताते हैं। ऐंकरिंग करने वाली लड़की को दिमाग के साथ देह से भी सुंदर दिखना चाहिए। यहां मुक्ति स्त्री का अपना चुनाव है। यहां ब्यूटी कल्चर में बहुत सी आजादी व्याप्त है। विडम्बना यह है कि पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था में बुध्दि- कौशल, प्रतिभावान एक स्त्री को माल शब्द की संज्ञा दी जाती हैं। उनके पद, अधिकार की अवहेलना की जाती है। और इसी बहाने आखिर सारे विज्ञापन स्त्री –देह के जरिए माल ही तो बेच रहे हैं। यह विचारणीय है कि पुरुष के हाथों ही स्त्री- उत्पीड़न की गाथा बकायदा बयां की जाती हैं। भारतीय समाज में पुरुष पति परमेश्वर की भांति एक स्त्री की , प्रेम , सेवाभाव, समर्पण न्यौछावर करती थकती नहीं है।

वेश्यावृति नारी की विवश, और दीनता की दास्तान है। उपभोक्तावादी संस्कृति के समक्ष देह व्यापार रूपी बेड़ियों में जकड़ी हुई है। वह चंद पैसों की लालच में पुरुष के हाथों की कठपुतली बन जाती है। जो कि यह नारी जाति के लिए घृणास्पद काला अध्याय से कम नहीं है। इसका समूचे रूप से बहिष्कार की जरूरत है। यहां प्रेमचंद के स्त्री – उत्पीड़न के लिए पुरुषवर्चस्व को ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जिम्मेदार ठहराया है। उनकी भद्र मानसिकता का ही नतीजा है जो यहां यह द्रष्टव्य है परमानन्द श्रीवास्तव ने पुरुष – वर्चस्व और स्त्री मुक्ति की चुनौतियां के माध्यम से कहा है — "हमें वेश्याओं को पतित समझने का कोई अधिकार नहीं है। हमारे शिक्षित भाइयों की ही बदौलत दालमंड़ी आबाद है, चौक में चहल –पहल है, चकलों में रौनक है...जिस समाज में अत्याचारी जमींदार, रिश्वती राज्य – कर्मचारी, अन्यायी महाजन, स्वार्थी बंधु आदर और सम्मान के पात्र हों, वहां दालमंडी क्यों न आबाद हो। "[18] यह पुरुषसत्तात्मक क्रूर व्यवस्था का ही मनोरंजन का साधन है, जहां स्त्री की दयनीय अवस्था पर उनकी उत्पीड़न की तरफ नजर नहीं जाता। भूमंडलीकरण की एकल संस्कृति है मोनो कल्चर। देश के हर महानगर में पांचसितारा होटलों में मोनो कल्चर एक फैशनबल बन जा रहा है। होटलों में यात्रियों के लिए हरेक लग्दरी की व्वयस्था होती है शराब के साथ-साथ शवाब। दहेज के प्रसंग का भी उजागर करना चाहिए। समाज की इस मानसिकता को बदलने की जरूरत है।

आधुनिक भारतीय नारी की जो स्थिति आज है वह समय के साथ – साथ कई विपदाओं, विपत्तियों कई विद्रपताओं का सामना करते हुए , अनेकों मान्यताओं , वर्जनाओं को तोड़ते हुए यहां तक पहुंची हैं। पहले पहल नारी की समाज श्रेष्ठता का श्रेय का गुण गाया जाता था 'नारी तुम केवल श्रध्दा हो। ' आज का भारतीय समाज पुरुष वर्चस्व के आतंक के साये में है वहीं नारियों ने अपनी अस्मिता, अस्तित्व अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रही हैं। सदियों से चार दीवारी के अंदर बंद रहने वाली हर उन क्षेत्रों से बंदिश, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो चाहे आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, के हर उन उत्थान के ज्ञान से वंचित, कुपमण्डुकता के अंधकार में रहने वाली, हमेशा चुप रहने वाली नारी आज अपनी आवाज बुलंद कर रहीं हैं। यह पुरुष मानसिकता की दकियानूसी सोच का प्रतिकार ही हैं— "उस समय कहा गया कि अनेक ऐसे काम हैं, जो पुरुष कर सकते हैं, पर स्त्रियां नहीं। मसलन – गणित या विज्ञान से संबंधित काम, राज-काज या कानूनी काम, डॉक्टरी पेशे में सर्जन का काम, ट्रक चलाने से लेकर हवाई जहाज उड़ाने का काम वगैरह। इसलिए स्त्रियों को राजनीति वगैरह में पड़ने की वजाय घरबार चलाने और बच्चों के पालन – पोषण तक सीमित रहना चाहिए।"[19] परम्परागत अधीनता रूपी कटघरे से खुद को आजाद कर रहीं हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पहाड़ी क्षेत्रों में महिलाएं श्रमजीवी होती हैं दिन – रात खटती रहती हैं। वहीं पुरुष के निठ्ठलेपन को नजरअंदाज कर दिया जाता है। सभ्य समाज में स्त्री की दशा कमोवेश उन्हीं स्थितियों से गुजरती हैं जो कि दूसरे गुमनाम क्षेत्रों में व्याप्त है। जहां तक दलित स्त्रियों की बात है उन्हें भी पुरुष के मर्दानगी के तले दबकर रहती हैं। बार – बार घरेलु क्लेश की शिकार होती हैं। पुरुष के हाथों पिटती भी हैं। जरूरत है इस पुरुष की मर्दानगी से छुटकारा पीने की। अपने अधिकार अपने हक के लिए आवाज उठाने की। वहीं आदिवासी स्त्रियों की बात करें तो उनकी भी यही दशा है। प्रशासन भी नजरअंदाज कर रही है —"आदिवासी युलतियों के साथ सामूहिक दुराचार शिकायत के बावजूद नहीं दर्ज हो पायी प्रथमिकी।"[20]

आज स्वतंत्रता पूर्व की स्थिति नहीं है भारत के स्वतंत्रता के पश्चात नारियों की शिक्षा की गतिविधि का बखूबी प्रसार हुआ है। शिक्षा से लेकर प्रशासन तक वह आगे आना चाहती हैं। संभवत हर क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं। और पुरुष समाज को भी बखूबी अपनी भमिका की ओर सचेतन कर रही हैं। आज भारतीय नारी अपने घर – बार संभालने के साथ –साथ दोहरे दायित्व का निर्वाह कर रही हैं। वह नौकरी या व्यवसायी के क्षेत्र से जुड़ी है। यह समाज के उत्थान की ओर अग्रसर ही कहा जाएगा। एक नारी के लिए आर्थिक आजादी ही सब कुछ नहीं है वह परम्परागत सामाजिक दायरे से बंधी हुई है। वह उन्मुक्त होकर बेपरवाह नहीं हो सकती उसे समाज के कायदे कानून के मुताबिक काम करना पड़ता है। — "यह एक त्रासद सच्चाई है कि कामकाजी महिलाएं हर समय घेरे में बंद दिखती हैं। परिवार में देर से आएं तो उनका आचरण संधिग्घ माना जाता है। वर्किंग वूमन् हॉस्टल की भी अपनी आचार संहिता होती हैं। "[21] नारी आज डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, अध्यापक, तक ही सीमित नहीं हैं वह हवाई जहाज चलाने वाली पायलट, रेलगाड़ी, बस, ट्रक मोटर साईकिल का भी लुफ्त उठा रही हैं। वह पुरुष वर्चस्व को पीछे छोड़ने की माद्दा रखती है।

आर्थिक दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि नारी आज राजनीतिक, प्रशासनिक क्षेत्र मे भी अपनी अहम् भूमिका निभायी है। आज वह मुख्यमंत्री के पद पर आसीन हो चुकी हैं और कई अभी भी आसीन हैं जैसे ममता बनार्जी, प्रियंका गांधी, सोनिया गांधी, शीला दीक्षित, स्मृति ईरानी, प्रतिभा पाटिल, सीतारमण, जय ललिता आदि हैं। इतना ही नहीं स्त्री दूसरी दुनिया में भी कल्पना चावला, सुनिता विलियम आदि ने अपना परचम फहराया है। खेल जगत के क्षेत्र में मेरिकोम, सानिया

मिर्जा,स्वपना दास, आदि ने भी अपनी कीर्तिमान हासिल की हैं। देश के क्षेत्र रक्षण में भी दुश्मनों को लोहा मनवाया है।

आज के वर्तमान समय में स्त्री आर्थिक दृष्टि से स्वच्छंद है वह अर्थ उपार्जन कर रही हैं। जिससे समाज की मानसिकता में बदलाव होता नजर आ रहा है। पुरुष की भूमिका में भी बदलाव दृष्टिपात हो रहे हैं। परम्परा के भंवर के तले स्त्री अब दबी नहीं हुई है अपनी लक्ष्य की ओर अग्रसर है। पहले नारी के नौकरी करने वाली पति को औरत की कमाई खाने वाला कहकर चिढ़ाया जाता था परन्तु आज समाज देखने का नजरिया बदला है। अब समय आ गया है पुरुष- वर्चस्व के बंधन रूपी दायरे के अंतर्विरोधी की पड़ताल की जाए और स्त्री मुक्ति के तंतुओं को नजरअंदाज न किया जाए बल्कि अंतरजाल के मकड़जाल से आजाद होना है। स्त्री के चेतना को जगाया जाए उन्हें शिक्षित किया जाए। नारी अपने अस्तित्व की पहचान कर पाएगी। सही दशा और दिशा को भाप पाएंगी। तभी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक हर क्षेत्र में अपना मुकाम हासिल करेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची —

1. स्त्री विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य, डॉ. के एम. मालती, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2012 पटना 800004 पृ 7-8
2. हंस, पत्रिका, जून 1997, पृ.33
3. मैथिलीशरण गुप्त, यशोधरा, राष्ट्रकवि का स्त्री-विमर्श, प्रभाकर श्रोत्रिय,प्रथम संस्करण-2010, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली- 02, पृ. 27
4. उदय प्रकाश, रात में हारमोनियम, पहला संस्करण-2015, वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली-110002 पृ.31
5. वही, पृ. 32
6. विश्वनाथप्रसाद तिवारी, स्त्री को समझने के लिए, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण-2014, पृ.136
7. रश्मि रमानी,साज चुप है,रामकृष्ण प्रकाशन,पहला संस्करण-2019 विदिशा म.प्र., पृ.45
8. सविता सिंह. अपने जैसा जीवन, रामकृष्ण प्रकाशन, संस्करण-2001,पृ.40
9. सविता भार्गव, किसका है आसमान , राजकमल प्रकाशन पहला संस्करण-2012पृ. 98
10. निर्मला पुतुल,नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृ.11
11. किरण अग्रवाल, यह भी उर्मिला है, उन्नयन प्रकाशन पृ.153-154
12. स्नेहीमयी चौधरी,दलदल, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण-1976, पृ.67
13. सविता भार्गव, अपने आकाश में, राजकमल प्रकाशन पहला संस्करण-2017 पृ-86
14. परमानंद श्रीवास्तव, समकालीन कविता सम्प्रेषण का संकट,प्रथम संस्करण-2014,वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली-02,पृ. 179
15. विनय विश्वास, आज की कविता, पहला संस्सकरण-2009, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली-02

16. पांडेय डॉ ब्रजकुमार, पांडेय रवि नारायण, 'स्त्री विमर्श के असली नकली चेहरे ', साहित्य संसद, प्रथम संस्करण: 2008 पृ.122
17. विवेकानंद भारतीय नारी- रामकृष्ण मठ- नागपुर – उन्नीसवां संस्करण - 2003, पृ. 14
18. आजाद औरत कितनी आजाद, शैलेनेद्र सागर रजनी गुप्त, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली- 110002 पृ. 18 46
19. वही, पृ. 46
20. दैनिक जागरण, वराणसी, दिनांक 09.01.2006
21. आजाद औरत कितनी आजाद, शैलेनेद्र सागर रजनी गुप्त, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली- 110002 पृ. 12